## श्रम विभाग

#### ग्रादेश

# दिनांक। 2 स्रप्रैल, 1985

सं. ग्रो. वि./फ़रीदाबाद/13-85/15506.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राथ है कि मैं. ईलाईट सेरामिक्स प्रा. लि., प्लाट नं० 161, सैक्टर-24, फ़रीदावाद. के श्रमिकों तथा प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रोद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यार्थनिणय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, अब, श्रीद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की प्राप्त 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का अयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त श्रीद्यनियम की धारा 7-क के अधीन गठित, श्रीद्योगिक श्रीधकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामले, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रीमकों के बीच या तो विवादप्रस्त मामले है अथवा विवाद से स्संगत या सम्बन्धित मामले है, न्यायनिर्णय हंस निर्दिष्ट करते हैं:---

- 1. क्या सभी श्रमिक वर्ष 1983-84 का 20 प्रतिशत की दर से बोनस लेने के हकदार हैं यदि हां, तो किस विवरण में ?
- 2. क्या सभी श्रमिक प्रति वर्ष 2 जोड़ी टैरीकाट की वर्दी तथा जूते लैंने के हकदार है ? यदि हां तो किस विवरण में ?
- क्या सभी श्रमिक प्रतिदिन ग्राधा किलो दूध, एक पाव गुड़ लेने के हकदार है? यदि हां, तो किस विवरण में?
- क्या सभी श्रमिक प्रति माह 2 किलो साबुन लेने के हकदार है ? यदि हां तो किस विवरण में ?
- 5. क्या भट्टी मोल्डिंग सैन्टर फायरिंग पर कार्य करने वाले सभी श्रमिक 25 रु. श्रतिरिक्त राशि लेने के हकदार है ? यदि हां तो किस विवरण में ?

#### दिनांक 16 ग्रप्रेल, 1985

सं॰ ग्रो॰वि॰/ग्रम्बाला/11-85/15921.-चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं॰ हरकल्याण वाईन्डरज एण्ड प्रिन्टिर्ज, कोठो नं. 30-34, सैक्टर-18, पंचकूला (हरियाणा), के श्रमिकों तथा प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित नाममें के सम्बन्ध में कोई श्रीक्षोगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल, इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसितिए, सब, स्रौदोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपक्षारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7-क के अधीन गठित श्रौद्योगिक अधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को, नीचे विनिर्दिष्ट मामले, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त है अथवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धि मामला हैं, न्यायनिणंय हेतु निर्दिष्ट करते हैं

क्या श्रमिक वर्ष 1982-83 का 20 प्रतिणत बोनस लेने के हकदार हैं ? यदि हां तो किस विवरण में?

सं शो विव भित्रानी । 3-84 | 15950. — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि परिवहन आयुक्त. हरियाणा ; (2) हरियाणा राज्य परिवहन, भिवानी, के श्रीमिक श्री विचित्र सिंह तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई शोदोगिक विवाद है ;

म्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को त्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, अब, श्रीबोगिक विवाद अधिनियम, 1947, कि घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियागा के राज्यगत इसके द्वारा सरकारी अधिमूचना सं० 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिसूचना सं० 3864-ए.-एस-स्रो (ई)श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त अधिनियम की घारा 7 के प्रधीन गठित श्रम त्यायालय, रोहतक, को विवादप्रस्त या उससे सुसगत या उससे सम्बन्धित नीच लिखा मामला न्यायनिर्णय हुँतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत प्रथवा सम्बन्धित मामला है:---

वया श्री विचित्र निह की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ? दिनांक 22 अप्रेल, 1985

सं. श्रो.िवः/एफ.डोः $\sqrt{87-84}/17335$ .—-चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. राजी मशीन टुल्ज, सैक्टर- 27ए, फरीशबाद, के श्रमिकों तथा प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सन्वन्ध में कोई श्रीद्योगिक विवाद है ;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हैतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (प) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त श्रधिनियम की धारा 7-क के अधीन गठित श्रीद्योगिक श्रधिकरण, हरियाणा, करीद बाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामले, जो कि उक्त प्रयन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला हैं, श्रथवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला हैं त्यायिनर्णय हें तु निर्दिष्ट करते हैं:—

पया कारखाना के श्रमिक एक गर्म वर्दी एवं तीन ठण्डी वर्दी के हकदार हैं? यदि हां, तो किस विवरण में?

एम. सेठ,

वित्तायुक्त एवं सिवत, हरियाणा सरकार, श्रम तथा रोजगार विभाग ।

### दिनांक 4 श्रप्रल, 1985

सं. श्रो.त्रि./फ़रीदाबाद/28-85/14094.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. एच. एस. मर्न निकल वर्षस 1सी/69, एन० ग्राई० टी०, फरीदाबाद के श्रमिक श्री विरेन्द्र कुमार तथा उसके प्रवन्तकों के मध्य इसमें इसके वार जिखित मामले में कोई श्रीकोगिक विवाद है;

# प्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को ग्यायनिर्णय हेतु निर्विष्ट करका वांछनीय समझते हैं :

इस लिए, ध्रव, श्रीशोगिक विवाद श्रिष्ठिनियम, 1947 की झारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की नहीं बिल्तियों का प्रयोग करत हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके हारा सरकारी प्रिष्ठसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिवांक 20 जून, 1958, बाथ पढ़ते हुए ग्रिष्ठमूचना मं. 11495-जी-श्रम-88-श्रम/57/11245, दिनोंक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उनत प्रधिवियम की झारा 7 के ग्रिष्ठीन गठित श्रम न्यायासय, फरीदाबाद को विवादशस्त या उससे सुग्नंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उनत प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादशस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रम्थ सम्बन्धित सामला है:—

क्या श्री विरेन्द्र कुमार की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. बो. वि./फ़रीदावाद/28-85/14101.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राम है कि में. एच. एस. मर्कनिकल वर्कस, 1सी/69, एव. ग्राई. टो., फ़रीदावाद, के श्रमिक श्री श्रहण कुमार तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीशोगिक विवाद है:

भीर वृंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्विष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रन, ग्रोबोगिक विनाद ग्रिविनयम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जुन, 1968, के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं 11495-जी-अम-88-अम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के धिवीन गठित अम न्यायालय, फरीदावाद, को विवादग्रस्त या उससे मुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनगंय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रयवा संबंधित मामला है :—

क्या श्री अरुण कुमार की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. श्रो. वि./फ़रीदाबाद/28-85/14108.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. एच. एस. मर्कनिकल वर्कस, 1सी/69, एन. ग्राई. टी., फ़रीदाबाद, के श्रीमक श्री मथुरा पंडित तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामला में कोई ग्रीशोगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्याय निर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करत हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415—3—अम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुये अधिसूचना सं. 11495—जी—श्रम 88—श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधि-नियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय के लिये निर्दिश्ट करते है. जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से स्संगत अथवा सम्बन्धित मामला है : ——

क्या श्री मथुरा पंडित की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है? दिनांक 11 अभैल, 1985

सं. थ्रो.वि./रोहतक/216-84/15144.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि (I) परिवाहन आयुक्त, हरियाणा रोडवेज, चन्डोगड़, (2) जनरल मनेजर. हरियाणा रोडवेज, सोनीपत, के श्रमिक श्री धर्मवीर तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके वाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्विष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, अय, धीटोपिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641—1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970, के साथ पठित सरकारी अधिसूचना सं. 3864—ए—एस—ओ. (ई)-श्रम/70/1348, दिनांक 8 मई, 1970, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंग्त या उससे स्विध्त मिन्दे लिखा मामला न्याय निर्णय हेतु निविद्द करते हैं, जो कि उक्त प्रदाहकों स्था श्रमित वे कि दा तो विवाद सं सुसंगत या संबंधित मामला है :—

क्या श्री धर्मवीर की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० घो०वि०/रोह्तक/26-85/15152. — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै. जनता ग्रामोद्योग समिति, दिल्ली पोट्रीज. उद्योग, बहादुरगढ़ (रोहतक), के श्रीमक श्री जीवत यादव तथः उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिन विवाद है;

प्रीर च्ंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्विष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इति र, अब, आँवागिक विवाद प्रवितिषम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रवान की मई । किता में तर्वे हुए, हरियामा के राज्य गत इस के द्वारा सरकारी अधिभूषना सं० 9641-1-अम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी अधिभूषना सं० 3864-ए. एस. भो. (ई) अम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा ? के भधीन गठित अम न्यायालय, रोहतक, को विवादसस्य या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे विवाद मामला न्यायालयं हेनु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा अमिक के बीच या तो विवादसस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला है :--

क्या श्री जीवत यादव की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?